प्रखर प्रतिभा की जननी

इच्छा शक्ति

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

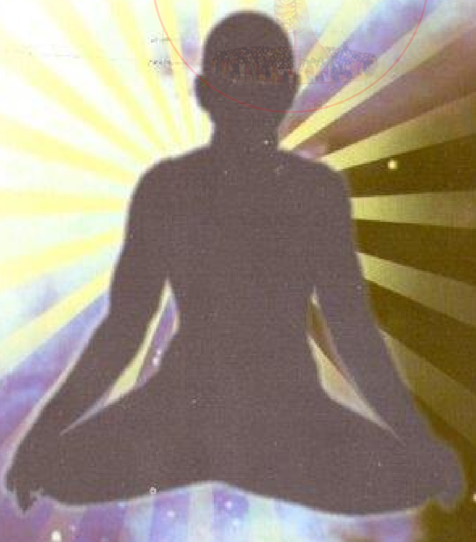

– श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

प्रखर प्रतिभा की जननी इच्छाशक्ति

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०– २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : ९.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

■ प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

■ लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

■ मुद्रक

युग निर्माण योजना प्रेस,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामान्य से असामान्य बनाने वाली शक्ति

मनुष्य शरीर में सबसे अधिक संवेदनशील अवयव मस्तिष्क है। वह मात्र सोचने-विचारने के ही काम नहीं आता वरन् उसमें उत्पन्न होने वाली विद्युत संपूर्ण शरीर का क्रिया संचालन करती है। अचेतन मस्तिष्क से संबंधित असंख्यों तार शरीर के प्रत्येक घटक तक पहुँचते हैं, उसकी सुव्यवस्था रखते हैं, आवश्यक आदेश देते हैं तथा समस्याओं का समाधान करते हैं।

यह शरीर चर्चा की बात हुई, इसके अतिरिक्त सचेतन भाग द्वारा विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मन और बुद्धि द्वारा निर्णय किए जाते हैं और उनकी पूर्ति के लिए योजना बनाने और कार्यान्वित करने का उत्तरदायित्व उठाया जाता है। इसके प्रखर होने पर ही मनुष्य प्रतिभावान बनता है और अनेक सफलताएँ अर्जित करता है। बाह्य मस्तिष्क का स्तर मंद होने पर मनुष्य मूर्ख कहलाता है और उसका चिंतन अटपटा रहता है।

जीवन के हर क्षेत्र को मस्तिष्क प्रभावित करता है। उसके स्तर के अनुरूप शारीरिक स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। मनोविकार स्वास्थ्य को गिराने और व्यक्तित्व को अटपटा बनाने के प्रधान कारण होते हैं। इसी प्रकार किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की-गुण, कर्म, स्वभाव की दिशाधारा इसी आधार पर बनती है कि मस्तिष्क को किस प्रकार प्रशिक्षित एवं अभ्यस्त किया गया ।

यों कोई व्यक्ति आकांक्षाओं के अनुरूप अपने मनोबल को विकसित कर सकता है, तदनुरूप साधन जुटा सकता है और उस दिशा में सहायक सिद्ध होने वाले व्यक्तियों के साथ संपर्क बना सकता है, पर यह अपवाद रूप ही होता है और साथी, सहयोगी, कुटुंबी जिस मार्ग पर चलते हैं उसी का अनुकरण होने लगता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्संग की तुलना में स्वाध्याय प्रभावशाली होता है । यदि उन्नतशील बनने वाले तथ्यों से भरा-पूरा साहित्य मिलता रहे और उसमें प्रस्तुत किए गए विवेकपूर्ण तथ्यों को विवेक पूर्वक अपनाया जाता रहे तो भी संवेदनशील मस्तिष्क उसी प्रकार के ढाँचे में ढलने लगते हैं जैसे कि वातावरण प्रभावित करता है ।

प्रकृति भी ऋतुओं के, वय के अनुरूप मनुष्य में कई परिवर्तन करती रहती है । काम वासना, मनोरंजन के लिए उमंग यों हारमोनों से संबंधित हैं किंतु संचित संस्कार भी भले-बुरे कामों के लिए उत्साह प्रदान करते हैं । मस्तिष्क माता के गुण-कर्मों से अत्यधिक प्रभावित होता है । इसलिए कहा जाता है कि सुसंतति प्राप्त करने की आकांक्षा की पूर्ति के लिए जननी का स्तर ऊँचा उठाया जाना चाहिए उसके स्वास्थ्य, शिक्षण के अतिरिक्त ऐसा वातावरण दिया जाना चाहिए जिसमें प्रसन्नता के साथ-साथ नैतिकता की प्रेरणा भी मिलती रहे । सुयोग्य सन्तान के लिए जननी का स्तर उठाने का प्रयत्न करना चाहिए । दूध पीने की तरह वह स्वभाव की विशेषताएँ भी बहुत कुछ माता से प्राप्त करता है ।

यह मानसिक विकास का प्रथम अध्याय है । दूसरे अध्याय में स्कूली प्रशिक्षण को महत्व दिया जाता है । पाठ्यक्रम के सहारे विविध-विधि जानकारियों की आवश्यकता है, किंतु अध्यापकों और साथियों के स्वभाव से बनने वाला वातावरण भी मानसिक विकास में कम सहायक नहीं होता । इसलिए जिन्हें बुद्धिमान बनाना है, उन्हें ऐसे वातावरण में पढ़ाया जाना चाहिए, जहाँ मूर्खतापूर्ण बातें न हों ।

मानव मन की भिन्नताओं और विशेषताओं में प्रकृतिगत सूक्ष्म प्रवाहों का भी प्रभाव पड़ता है । हर मस्तिष्क की संरचना देखने पर एक जैसी लगते हुए भी उसके न्यूरोन घटकों के आकार-प्रकार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत अंतर होता है । जिस प्रकार हथेली की लकीरें और पोरवों पर रहने वाले अंकनों में प्रत्येक मनुष्य की स्थिति भिन्न होती है, उसी प्रकार मस्तिष्कीय न्यूरोन, जीव कोष तथा विद्युत कंपनों में भिन्नता रहती है । मस्तिष्क में दो प्रधान ग्रंथियाँ हैं । एक पिट्युटरी, दूसरी पीनियल । इनसे हारमोन स्तर के स्रावों का प्रवाह बहता रहता है । उसकी न्यूनाधिकता तथा दिशाधारा के अनुरूप मनुष्य की अभिरुचि तथा प्रतिभा प्रवाहित होती है । वंशानुक्रम से पीढ़ियों के मिले उत्तराधिकार भी इसी क्षेत्र में विद्यमान रहते हैं । ग्रह-नक्षत्रों के विकिरण एक मस्तिष्क पर एक प्रकार का प्रभाव डालते हैं,तो दूसरे पर दूसरे प्रकार का । ऐसे ही अनेक कारणों को देखते हुए लगता है कि मस्तिष्क एक प्रकृतिगत देन है और उसी आधार पर मनुष्य मूर्ख या बुद्धिमान होता है । स्वभाव और चिंतन की दृष्टि से भी यह इन्हीं कारणों से प्रभावित रहता है । यह तथ्य बताते हैं कि सौंदर्य और कुरूपता की तरह मस्तिष्कीय विलक्षणताएँ भी प्राकृतिक कारणों एवं जन्मजात संस्कारों से प्रभावित होती हैं । इतने पर भी वातावरण एवं संकल्प का अपना महत्व है । कालिदास, वरदराज आदि के उदाहरण ऐसे हैं जिनमें उनकी आरंभिक स्थिति देखते हुए अनुमान होता था कि ये सदा मूर्ख रहेंगे । विद्याध्ययन में भी इन्हें सफलता न मिलेगी, पर जब उनने संकल्प पूर्वक विद्वान बनने का निश्चय किया तो प्राकृतिक संरचना को उलटकर उनने तीक्ष्णता अर्जित कर ली और सामान्यजनों की अपेक्षा अधिक ऊँचे स्तर के विद्वान बन गए । इससे प्रतीत होता है कि संरचना और वातावरण का प्रभाव कैसा ही क्यों न हो, मनुष्य उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन कर सकता है । सुधारना ही नहीं बिगाड़ना भी संभव है ।

जिस प्रकार औषधियों का शरीर के विभिन्न अवयवों पर प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार संकल्प भी शरीर के ढाँचे को, स्वास्थ्य को ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं मानसिक क्षमता को भी प्रभावित करता है और स्वभाव तक में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाता है । जिस प्रकार आहार का शरीरक्रम के साथ भारी संबंध है, उसी प्रकार आकाँक्षा, चिंतन प्रक्रिया और संकल्प शक्ति मनःसंस्थान को प्रभावित करती है । उसकी संरचना का कितना ही महत्व क्यों न हो-वातावरण से, प्रकृति प्रवाहों से वह कितना ही प्रभावित क्यों न रहता हो, पर इन सबमें इतनी शक्ति नहीं है कि वह निश्चयपूर्ण संकल्पों के दबाव को अस्वीकार कर सके । शरीर के अन्यान्य अवयवों को हम इच्छानुसार मोड़ने-मरोड़ने में एक सीमा तक ही सफल हो सकते हैं पर मस्तिष्क के संबंध में बात दूसरी है उसे सुधारा, बदला ही नहीं उलटा तक जा सकता है । इस दृष्टि से वह जितना सशक्त और महत्वपूर्ण है, उतना ही कोमल भी है । वह शरीर में सबसे ऊँचे स्थान पर अवस्थित है । इतने पर भी वह संकल्प शक्ति से ऊपर नहीं है । संसार में ऐसे अगणित व्यक्ति हुए हैं, जिनका आरंभिक जीवन साधारण ही नहीं हेय स्तर का भी था, किंतु जब उनने अपने आपे को उच्चस्तरीय बनाने का निश्चय कर लिया तो अभ्यस्त आदतें जो परिवर्तन स्वीकारने में आना-कानी करती थीं, संकल्प शक्ति के दबाव से आमूल-चूल परिवर्तित हो गईं । सामान्य व्यक्ति असामान्य बन गए ।

मनुष्य में छिपी इच्छा-शक्ति की सामर्थ्य

संकल्प शक्ति के रूप में मनुष्य को मिला वरदान इतना सामर्थ्यवान है कि वह भौतिक अथवा आत्मिक किसी भी क्षेत्र में प्रगति मार्ग में संपन्न होने वाली प्रत्येक बाधा को पैरों तले रौंदकर आगे बढ़ता तथा सफलताओं को अपने कदमों में बिछा देख सकता है ।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं अथवा जिन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभाएँ प्रदर्शित की हैं, उसके मूल में उनका दृढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकल्प ही कार्यरत रहा है । यही वह बल है-जिसके आधार पर महान लक्ष्य को लेकर साहसिक यात्राएँ संपन्न की गई हैं । नेपोलियन ने इसी के सहारे अजेय आल्पस पर्वत को सेना सहित पैदल पार कर संसार में अनोखा कीर्तिमान स्थापित किया था । शेरपा तेनसिंह और हिलेरी ने संसार के सर्वोच्च पर्वत शिखर गौरी शंकर (एवरेस्ट) पर जा पहुँचने का दुस्साहस किया था और वहाँ अपनी विजय पताका फहराते हुए यह उद्घोष किया था कि इस संसार में कुछ भी ऐसा दुष्कर कार्य नहीं है जिसे संकल्प बल से संपन्न न किया जा सके ।

आत्मिक क्षेत्र में उच्चस्तरीय लक्ष्य तक जा पहुँचने वालों में ध्रुव और सप्त ऋषियों की गणना होती है, जो अभी भी आकाश में ज्योति पुंज बनकर चमकते हैं । दिशा सूचक ध्रुव और आत्मबल की सर्वोच्च सिद्धि करने वाले ऋषि मंडल अभी भी अपनी गरिमा की ओर जनसाधारण का ध्यान आकर्षित करते हैं और कहते हैं कि सामान्य स्थिति में जन्मे और पले मनुष्य को हमारी तरह अजस्र श्रेय साधने में निश्चित रूप से सफलता मिल सकती है, पर आवश्यकता मात्र एक ही वस्तु की है और वह है-साहसिक सत्संकल्प की ।

पूर्व अभ्यासों, आदतों एवं कुसंस्कारों को बदलना कठिन तो है पर इतना नहीं जिसे प्रचंड संकल्प शक्ति के सहारे निरस्त न किया जा सके । तुलसीदास, सूरदास युवाकाल तक कामुकता तथा नैतिकता की, मर्यादाओं की दृष्टि से हेय जीवन ज़ीते रहे, किंतु जब उनने अपने को बदल डालने का दृढ़ निश्चय कर लिया तो पुरानी आदतों तथा मान्यताओं को बदलते देरी न लगी । आंतरिक परिवर्तन प्रस्तुत करने में दृढ़ संकल्प के अतिरिक्त और शक्ति काम नहीं करती । सामान्य लोग असमंजस में पड़े रहते तथा आत्मनियंत्रण में सफलता न मिलने का रोना रोते रहते हैं, पर दृढ़ संकल्प का आश्रय लेने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनस्वी के लिए कुछ भी असंभव नहीं है । ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है । वाल्मीकि तथा अंगुलिमाल जैसे डाकू संत बने हैं । किसी समय का महान क्रूर शासक अशोक जब बदला तो उसने धर्म चक्र प्रवर्तन की मूर्धन्य भूमिका निभाई । वासना के दलदल में पड़ी आम्रपाली बदली तो बौद्ध धर्म की महान प्रचारिका बन गई । आंतरिक परिवर्तन से वह परम साध्वी कहलाई तथा ऋषियों से श्रद्धा के साथ सराही गई । अजामिल, सदन जैसे अगणित व्यक्तियों के समय-समय पर ऐसे ही आंतरिक परिवर्तन उनकी संकल्प शक्ति के माध्यम से ही संभव हो सके हैं ।

असफलताएँ सिर्फ यह सिद्ध करती हैं कि सफलता के लिए जो तत्परता बरती जानी चाहिए उसमें कहीं कोई कमी रह गई है । मनस्वी हारते नहीं वे हर असफलता के बाद दूने साहस, चौगुने उत्साह के साथ-साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं । अब्राहम लिंकन १७ बार पराजित होने के उपरांत चुनाव जीत पाए थे । कठिनाइयों के साथ पग-पग पर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते चले गए । जार्ज वाशिंगटन अमरीका के श्रद्धा पात्र राष्ट्रपति बने । जन्म से ही उन्हें घोर गरीबी का सामना करना पड़ा पर वे अपने ही पुरुषार्थ के सहारे आगे बढ़ते गए ।

व्रतशील अपने संकल्पों के प्रति दृढ़ रहते तथा हर हालत में उन्हें पूरा करते हैं । भीष्म ने आजीवन ब्रह्मचारी रहने का व्रत लिया और उसे पूरा कर दिखाया । गिरता शरीर नहीं, मन है । मनोबल ऊँचा रहने पर मानसिक दुर्बलताओं की दाल नहीं गलती । पशु प्रवृत्तियाँ भी सिर पर चढ़ बैठने का साहस नहीं करती हैं । भागीरथ का गंगा अवतरण अभीष्ट था । वे प्रचंड तपश्चर्या में संलग्न होकर उसे पूरा करने में सफल हुए । जगद्गुरु शंकराचार्य की आरंभिक परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थीं । जिनमें उनके द्वारा किसी बड़े उपक्रम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की आशा की जा सके, किंतु उन्होंने अपनी प्रचंड प्रतिभा का उपयोग किसी महान प्रयोजन में करने का निश्चय किया और उसमें सफल रहे ।

कोलम्बस अपनी नाव लेकर भारत की खोज में निकला । समुद्र यात्रा की प्राणघातक चुनौतियों का सामना करते हुए, नई दुनियाँ अमेरिका को खोज निकालने में सफल हो सका । यह उसके प्रचंड संकल्प की ही परिणति थी । अंधी, गूँगी, बहरी हेलन केलर का विद्या की मूर्ति भाण्डागार बन सकना, सत्रह विश्व विद्यालयों से डाक्टर का सम्मान दिला सकना उसकी संकल्प शक्ति का ही चमत्कार है । इसके विपरीत साधन सम्पन्न छात्र भी अपनी असफलता का रोना रोते रहते हैं । इसमें अन्य कारण कम और मनोबल की दुर्बलता ही प्रमुख अवरोध उत्पन्न कर रही होती है ।

प्रख्यात अंग्रेजी साहित्यकार एच. जी. वेल्स की माता घरों में बर्तन माँजने की मजदूरी करके अपना और अपने बच्चों का पेट पालती थीं । ऐसी विकट परिस्थितियों में भी वे बड़े उत्साह से शिक्षा अर्जन के हर अवसर ढूँढ़ते रहे और उस प्रयास से उच्चकोटि के साहित्यकार बने । वैज्ञानिक एडिसन की जीवन गाथा भी वेल्स से मिलती-जुलती है । ढूँढ़ने पर ऐसे अन्य प्रमाण भी देश-विदेश में मिल सकते हैं, जिसमें विषम परिस्थितियों से जूझते हुए मनस्वी लोगों ने इतनी बड़ी-बड़ी सफलताएँ पाई हैं, जिन्हें चमत्कार कहा जा सकता है । वस्तुत: संकल्प शक्ति ऐसा दैवी अनुदान है, जिसकी अनुकंपा से लाभान्वित हो सकना हर किसी के लिए संभव है ।

नर हो या नारी-बालक हो या वृद्ध-स्वस्थ हो या रुग्ण-धनी हो या निर्धन परिस्थितियों से कुछ बनता बिगड़ता नहीं, महत्व शक्ति का है मनस्वी अपने लिए परिस्थितियाँ स्वयं बनाते तथा सफल होते हैं । संयम और श्रम कितना लगा, उसमें अंतर हो सकता है, पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म निर्माण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति अपनी आकांक्षा को प्रयत्नों के अनुरूप देर-सबेर पूरा कर लेते हैं । नर की तुलना में नारी की परिस्थितियाँ, कई दृष्टियों से न्यून मानी जाती हैं, पर यह मान्यता वहीं तक सही है जहाँ तक कि उनका मनोबल गया-गुजरा बना हुआ है । अपनी गरिमा को समझकर यदि वे संकल्प शक्ति को जगा लें तो कोई कारण नहीं है कि वे पुरुष से किसी क्षेत्र में भी पीछे रहें ।

विद्वान कैयट व्याकरण शास्त्र की संरचना में लगे थे । उसकी पत्नी भामती मूँज की रस्सी बँटकर उससे गुजारे का प्रबंध करती थीं साम्यवाद के जनक कार्ल मार्क्स भी कुछ कमा न पाते थे यह कार्य उनकी पत्नी जैनी करती थी । पुराने कपड़े खरीदकर उनमें से छोटे बच्चों के कपड़े बनातीं तथा फेरी लगाकर उनको बेचती थीं । आदर्शों के लिए पतियों को इस प्रकार कष्ट उठाकर भी प्रोत्साहित करने एवं सहयोग देने में उनका उच्चस्तरीय संकल्प बल ही कार्य करता था । बंगाल के निर्धन विद्वान प्रतापचंद्र राय ने अपनी सारी शक्ति और संपत्ति को लगाकर महाभारत का अनुवाद कार्य हाथ में लिया और बीच में ही चल बसे । उनकी पत्नी ने अवशेष कार्य को अपना संस्कृत ज्ञान बढ़ाकर पूरा किया ।

संकल्प बल-एक ईश्वरीय अनुदान

मनुष्य को बुद्धिबल एवं साधनों के अतिरिक्त संकल्पबल का इतना बड़ा ईश्वरीय अनुदान मिला है जिसके द्वारा वह असंभव को भी संभव करके दिखा सकता है । घटना सन् १९१० की है-एक जर्मनी ट्रेन में एक सोलह वर्षीय किशोर यात्रा कर रहा था । घर से भाग कर वह कहीं दूर जाना चाहता था, पैसे के अभाव में वह टिकट न ले सका । टिकट निरीक्षक को देखते ही उसने सीट के नीचे छिपने की कोशिश की, पर वह टिकट परीक्षक की निगाहों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच न सका । उसने किशोर से टिकट माँगा, टिकट तो उसके पास था नहीं । पास में अखबारका टुकड़ा पड़ा था, किशोर ने उसे हाथ में उठाया, मन में संकल्प किया कि यह टिकट है और उसने टिकट निरीक्षक के हाथों में वह टुकड़ा थमा दिया । मन ही मन यह संकल्प दुहराता रहा–हे परमात्मा ! उसे वह कागज का टुकड़ा टिकट दिखाई पड़ जाए । उसके आश्चर्य का तब ठिकाना न रहा जब देखा कि निरीक्षक ने उस कागज के टुकड़े को वापस लौटाते हुए कहा कि–क्या तुम पागल हो गए हो ? तुम्हारे पास टिकट जब है तो सीट के नीचे छिपने की क्या आवश्यकता है ?

'एबाउट माई सेल्फ' पुस्तक में बुल्फ मेंसिंग नामक एक रशियन परामनोवैज्ञानिक उपरोक्त घटना का उल्लेख करते हुए लिखता है कि उस दिन से मेरा पूरा जीवन बदल गया । पहले मैं अपने आप को असमर्थ, असहाय तथा मूर्ख मानता था, पर उस घटना के बाद यह विश्वास पैदा हुआ कि मेरे भीतर कोई महान शक्ति सोई पड़ी है जिसे जगाया, उभारा जा सकता है । उन प्रयत्नों में, मैं प्राणपण से लग गया तथा सफल भी रहा ।

सन १९१० से १९५० तक मेंसिंग को दुनियाँ भर में ख्याति मिली । उसकी संकल्प शक्ति की विलक्षणता का परीक्षण अनेकों बार विशेषज्ञ वैज्ञानिकों के समक्ष किया गया । स्टालिन जैसा मनोबल संपन्न व्यक्ति भी मैंसिंग से डरने लगा, भयभीत होकर स्टालिन ने उसे गिरफ्तार करा लिया, स्टालिन को सुनी हुई बातों पर विश्वास न था, मैंसिंग की परीक्षा उसने स्वयं ली । उसने मैंसिंग से कहा–तुम मेरे सामने अपनी सामर्थ्य का परिचय दो । वह सहर्ष इसके लिए राजी हो गया ।

स्टालिन ने आदेश दिया–बंद कमरे में से कल दो बजे तुम्हें छोड़ा जाएगा, एक व्यक्ति तुम्हें मास्को के एक बड़े बैंक में ले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाएगा, तुम्हें बैंक के कैशियर से एक लाख रुपए निकलवा कर लाना होगा । पर ध्यान रहे तुम मात्र अपनी वाणी का प्रयोग कर सकते हो किसी शस्त्र का नहीं ।

दूसरे दिन पूरी बैंक को सैनिकों से घिरवा दिया गया । दो व्यक्ति पिस्तौलें लिए छद्मवेश में मैंसिग के पीछे-पीछे चल पड़े ताकि वह किसी प्रकार की चाल न चल सके । ट्रेजरर के सामने उसे खड़ा कर दिया गया, मैंसिंग ने जेब से एक कोरा कागज निकाला-एकाग्र नेत्रों से देखा तथा ट्रेजरर को दे दिया । ट्रेजरर गौर से उस कागज को उलट-पलट कर देखकर आश्वस्त हो गया कि वह एक चैक है एवं सही है । उसे अपने पास रखकर उसने एक लाख रुपए मैंसिंग को दे दिए, उसे लेकर वह स्टालिन के पास पहुँचा तथा सौंप दिया । सारा विवरण जानकर स्टालिन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।

इतने पर भी स्टालिन को उसकी संकल्प शक्ति पर पूर्ण विश्वास न हुआ । उधर मैंसिंग वह धनराशि लेकर खजांची के पास पहुँचा, पूरी बात बताई । उसने चैक समझकर रखे हुए कागज को दुबारा देखा तो वह अब मात्र कोरा कागज था । धनराशि को वापस करते हुए मैंसिंग ने खजांची से कहा-महोदय ! क्षमा करें, यह संकल्प शक्ति का एक छोटा सा प्रयोग था । आपको इसका दंड न भुगतना पड़े इस कारण लौटाने आया हूँ । वह क्लर्क इस घटना से इतना अधिक हतप्रभ हुआ कि उसे हार्टअटैक का दौरा पड़ा और उसे कई दिनों तक भयावह सपने आते रहे । इस रहस्य की और भी पुष्टि करने की दृष्टि से उधर स्टालिन ने मैसिंग को दूसरा आदेश दिया कि सैनिकों की देखरेख में बंद कमरे से निकलकर वह ठीक बारह बजे रात्रि को स्टालिन से मिले । स्टालिन के लिए सैनिकों की कड़ी सुरक्षा वैसे भी रखी जाती थी, लेकिन यह व्यवस्था और कड़ी कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दी गई ताकि किसी प्रकार मैंसिंग निकल कर स्टालिन तक पहुँचने न पाए, पर इन सबके बावजूद भी निर्धारित समय पर स्टालिन के समक्ष पहुँचकर मुस्कराने लगा । स्टालिन को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, पर जो सामने घटित हो रहा था उससे इंकार कैसे कर सकता था ? भय मिश्रित स्वर में उसने मैंसिंग से पूछा कि यह असंभव कार्य तुमने किस प्रकार, किस शक्ति के सहारे किया-थोड़ा विस्तार में बताओ ।

मैंसिंग बोला-यह और कुछ भी नहीं, संकल्पवान का एक छोटा चमत्कार है । मैंने मात्र इतना किया कि मन को एक विचार, एक लक्ष्य के लिए एकाग्र किया-तत्पश्चात दरवाजे पर आकर सैनिक से निर्देश के स्वर में बोला मैं बेरिया हूँ । ज्ञातव्य है तब बेरिया को रूसी फौज का सबसे बड़ा अधिकारी, स्टालिन के बाद सर्व शक्तिमान अधिकारी माना जाता था ।

आपसे मिलने की इच्छा जाहिर करते ही सैनिकों की पहली कतार ने मुझे एक कमरे का नंबर बताया । वहाँ पहुँचने पर मैंने पुनः अपना परिचय पहले की भाँति दिया । सुरक्षा पर तैनात सैनिकों ने एक दूसरे दिशा वाले कमरे की ओर संकेत किया, वहाँ भी सशस्त्र सैनिकों की एक टोली मौजूद थी । जनरल बेरिया का नाम सुनकर व उन्हें प्रत्यक्ष देखकर उन सैनिकों ने भी अभिवादन करते हुए आगे का रास्ता बताया । इस प्रकार सैनिकों की सात टोली पार करने के बाद निश्चित रूप से यह मालूम हुआ कि आप कहाँ हैं ? अपना पूर्व की भाँति परिचय देकर मैं यहाँ आ सकने में सफल हुआ ।

मैंसिंग के द्वारा स्टालिन को एक नया सूत्र हाथ लगा कि मनुष्य के भीतर कोई ऐसी अविज्ञात शक्ति विद्यमान है जो प्रत्यक्ष सभी आयुधों से भी अधिक समर्थ है, उसके द्वारा असंभव स्तर के कार्य भी पूरे किये जा सकते हैं । स्टालिन ने मैंसिंग की अतीन्द्रिय सामर्थ्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के परीक्षण के लिए नामोर नामक एक मन:शास्त्री को नियुक्त किया जो अपने समय का मनोविज्ञान का मूर्धन्य विशेषज्ञ माना जाता था । लंबे समय तक उसने मैंसिंग का अध्ययन किया, अंततः उसने घोषणा की कि-मन की अचेतन शक्ति चेतन की तुलना में अधिक सबल है, उसे उभारकर अच्छे-बुरे दोनों ही तरह के काम लिए जा सकते हैं । मैंसिंग के भीतर का अचेतन प्रचंड रूप से जागृत है, उसी के माध्यम से वह प्रचंड संकल्प की प्रेरणा देकर दूसरों को सम्मोहित कर लेता है तथा अपने प्रयोजन में सफल हो जाता है ।

मन:शक्ति का ही है यह चमत्कार

निश्चय ही मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त दिव्य अनुदानों में इच्छा शक्ति का स्थान सर्वोपरि है । भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन में सफलताओं का मूल बीज दृढ़ इच्छा शक्ति को ही माना गया है । समस्त शक्तियों का उद्‌भव प्रबल संकल्प बल के द्वारा ही होता है । 'द इमोशंस एन्ड विल' नामक अपनी पुस्तक में ब्रिटिश मनोविज्ञानी बेन अलेक्जेन्डर ने कहा है-कि संकल्प बल की प्रचंडता मानवी व्यक्तित्व को उच्च सोपानों पर पहुँचा देती है । उनके अनुसार मनुष्य में अनेक कमजोरियाँ होती हैं जिनसे पिंड छुड़ाने के लिए मनोबल को ऊँचा रखना एवं इच्छा शक्ति को प्रखर बनाना पड़ता है । सफलता वहीं मिलती है जहाँ इच्छा शक्ति की प्रचंडता होती एवं तदनुरूप प्रयास किए जाते हैं । प्रबल इच्छा शक्ति मस्तिष्क को अपने ढाँचे में ढाल लेती है और उसी के अनुरूप शारीरिक-मानसिक गतिविधियाँ होने लगती हैं ।

शरीर क्रिया क्षेत्र में आए दिन योगाभ्यासियों द्वारा ऐसे ही क्रिया-कौतुक प्रदर्शित किए जाते रहे हैं जिन्हें देखने से सहज विश्वास तो नहीं होता, पर वैज्ञानिक निरीक्षण-परीक्षणों के दौरान वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिल्कुल सही पाए गए और उनकी इस क्रिया-कुशलता को सर्वसम्मति से स्वीकारा गया । ऐसा ही एक प्रयोग-परीक्षण हारवर्ड इंस्टीट्यूट फार साइकिक एंड कल्चरल रिसर्च की ओर से डा. थेरस ब्रोसे नामक एक फ्रांसीसी शरीर विज्ञानी के संरक्षण में आयोजित किया गया । इसके लिए वे अपने मित्र डा. माइलोवेनोविच के साथ योग की विलक्षणताओं की शोध करने के लिए भारत आए । अपने प्रयोगों के दौरान उनने अपने संदेहों के निवारणार्थ कई प्रकार की जाँच-पड़ताल के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले उसमें दिल की धड़कन बिल्कुल बंद कर लेने का दावा भी उनने सही पाया । ऐसे योगी तो काफी संख्या में मिले जो सामान्यतया ७२ बार प्रति मिनट की धड़कन को ३० तक घटा लेते हैं । ३ दिन से २८ दिन तक बिना साँस लिए, बिना अन्न-जल ग्रहण किए, बिना मल-मूत्र विसर्जन किए समाधिस्त रहने वाले योगियों में से अधिकांश के दावे सही पाए गए । उनके संज्ञाशून्य होने की बात उनका हाथ बर्फ में दबाए रहने और आग का स्पर्श कराने पर भी परीक्षाएँ खरी उतरीं । एक योगी संकल्पबल से जिस भी अंग से कहा जाता उसी से पसीना निकाल सकते थे । इससे उन्होंने पूर्वार्त अध्यात्म के मर्म को समझा व पाश्चात्य जगत में भारत के वास्तविक स्वरूप को प्रकट किया । यही नहीं एक बार लंदन में एक भारतीय योगी ने सन १९२८ में ऐसा ही प्रदर्शन किया था, उसने नाड़ी की गति को न्यूनतम २० और अधिकतम १२० करके डॉक्टरों को आश्चर्यचकित कर दिया । वह अपनी माँस-पेशियों और त्वचा को इतनी कड़ी कर लेता था कि सामान्य हथियारों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था ।

पंजाब के राजा रणजीतसिंह ने अंग्रेज गर्वनर को हरिदास नामक साधु के छह महीने लंबी भूमिगत समाधि का प्रमाण परिचय दिया था । वे साधु पूरे छह महीने गड्ढे में बंद रहे, गड्ढे बंद करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊपर से फसल बो दी गई थी ताकि उसमें किसी चालाकी, हेराफेरी की गुंजायश न रहे । छह महीने बाद समाधि खोल दी गई तो वे साधु जीवित निकले और कुछ ही समय में पूर्ववत् सामान्य हो गए ।

इस संबंध में-हिस्ट्री ऑफ दि सिख्स नामक पुस्तक (लेखक-डा. मैकग्रेगर) महाराजा रणजीत सिंह के गुरु स्वामी हरिदास द्वारा सन् १८३७-३८ में किए गए भूमिगत समाधि के प्रदर्शन का विस्तृत विवरण मिलता है । इसका निरीक्षण पंजाब में नियुक्त ब्रिटिश राज्य के तत्कालीन उच्चाधिकारियों ने किया था । स्वामी हरिदास को एक मजबूत संदूक में बंद करके जमीन में खोदे गए गहरे गड्ढे में उतार दिया गया फिर ऊपर से मिट्टी डालकर प्लास्टर से बंद कर दिया गया । ४० दिन पश्चात् गड्ढा खोदकर संदूक बाहर निकालने पर स्वामी जी का शरीर निश्चेष्ट पाया । हृदय और नाड़ी में भी स्पंदन नहीं था लेकिन सिर में शिखा वाला स्थान इतना तप्त था कि छूते ही हाथ जल जाता था । कान-नाक से मोम निकालकर पूर्व निर्दिष्ट विधि के अनुसार शरीर पर शीतल जल का छिड़काव करते ही उनका शरीर चैतन्य हो उठा तथा सभी उपस्थित लोगों व विशिष्ट अतिथियों से उसी तरह बातचीत करने लगे जैसे समाधि में जाने से पूर्व कर रहे थे ।

संत हरिदास की दूसरी समाधि की अवधि दस महीने थी । यह प्रदर्शन उन्होंने अदीना नगर में किया था, उस प्रसंग का संस्करण कैप्टन ओसवर्न ने अपनी पुस्तक 'रणजीत सिंह' में दिया है. । इस बार सुरक्षा, निगरानी और पहरेदारी संबंधी काफी एतिहात बरते गए । जिस जमीन के भीतर स्वामीजी समाधिस्त थे उस भूमि पर जौ की फसल बो दी गई ताकि भीतर से निकल भागने की धोखाधड़ी पकड़ी जा सके लेकिन पूरी सतर्कता के बावजूद ऐसी कोई घटना नहीं घटी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'ह्वॉट मेक्स ए लाइफ सिग्नीफिकेंट' नामक पुस्तक में सुप्रसिद्ध मनःशास्त्री विलियम मोक्स ने कहा है कि मनुष्य के भीतर अति मानवी सामर्थ्य विद्यमान हैं, जिन्हें करतलगत कर सकना हर किसी के लिए संभव है । इसका आरंभिक चरण है ढर्रे की गतिविधियों को उलटने तथा दूरदर्शितायुक्त महानता के मार्ग का अवलंबन करने के लिए अपने संकल्पों को परिपुष्ट तथा दृढ़ करना, इच्छाशक्ति को प्रखर बनाना । संकल्प की दृढ़ता पशुवत् अभ्यस्त स्वभावों से छुटकारा पाने तथा आत्म विजय प्राप्त करने का प्रमुख आधार है । इसका संपादन तथा अभिवर्धन निरंतर के अभ्यास से संभव है, जो जितना अधिक संकल्पवान् है वह उतना ही अधिक समर्थ है । आकांक्षा, संकल्प, दृढ़ता जब सत्प्रवृत्तियों की पक्षधर बन जाती है तो अतिमानवी सामर्थ्य हस्तगत करने का मार्ग क्रमशः प्रशस्त होने लगता है ।

संसार में कितने ही महामानव हुए हैं जिन्होंने अपने प्रचंड संकल्पबल के सहारे असंभव को भी संभव कर दिखाया । दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रयोग कर कितने ही भटके हुए लोगों को संमार्गगामी बनाया है ।

गुरु गोरखनाथ से एक कापालिक बहुत चिढ़ा हुआ था, एक दिंन आमना-सामना हो गया । कापालिक के हाथ में कुल्हाड़ी थी, उसे ही लेकर वह तेजी से गोरखनाथ को मारने दौड़ा पर अभी कुल दस कदम ही चला था कि वह जैसे का तैसा खड़ा रह गया । कुल्हाड़ी वाला हाथ ऊपर और दूसरा हाथ पेट में लगाकर हाय-हाय चिल्लाने लगा, वह इस स्थिति में भी नहीं कि इधर-उधर हिलडुल भी सके ।

मनस्वी पुरुषों में संकल्प बल का यही चुंबकत्व काम करता है, वे इसे इस स्तर तक विकसित कर लेते हैं कि जहाँ भी जिस भी क्षेत्र में प्रवेश करते हैं वहीं अपने प्रभाव क्षेत्र से अनेकों को लाभ देते देखे जाते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईसा मसीह, मुहम्मद, जरथुस्त आदि धार्मिक क्षेत्र के मनस्वी ही थे, जिन्होंने लोगों को अभीष्ट पथ पर चलने के लिए विवश किया । उपदेशक लोग आकर्षक प्रवचन देते रहते हैं, पर उनकी कला की प्रशंसा करने वाले भी उस उपदेश पर चलने के लिए तैयार नहीं होते । इसमें उनके प्रतिपाद्य विषय का दोष नहीं, उस मनोबल की कमी ही कारण है जिसके बिना सुनने वाले के मस्तिष्क में हलचल उत्पन्न किया जा सकना संभव न हो सका । नारद जी जैसे मनस्वी ही अपने स्वल्प पुरुषार्थ से लोगों की जीवनधारा बदल सकते थे । वाल्मीकि, ध्रुव, प्रह्लाद, सुकन्या आदि कितने ही आदर्शवादी उन्हीं की प्रेरणा भरी प्रकाश किरण पाकर आगे बढ़े थे ।

समर्थ गुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, गुरु गोविंदसिंह, दयानंद, कबीर आदि मनस्वी महामानवों ने अपने समय के लोगों को उपयोगी प्रेरणाएँ दी थीं और अभीष्ट पथ पर चलने के लिए साहस उत्पन्न किया था । गाँधी जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता संग्राम में अगणित व्यक्ति त्याग-बलिदान करने के लिए किस उत्साह के साथ आगे आए । यह अभी पिछले दिनों की घटना है । वस्तुतः ऐसे चमत्कार महामानवों के व्यक्तित्व में घनीभूत इच्छा शक्ति के कारण ही संभव हो पाते हैं ।

मनोबल की शक्ति : एक दैवी अनुभूति

साधनों के आधार पर सफलताएँ मिलती हैं । साधनों को ही बल भी कहते हैं । प्रत्यक्ष बलों में धनबल, बाहुबल, शस्त्रबल, बुद्धिबल आदि प्रमुख हैं, पर इन सबसे बढ़कर है मनोबल । मनोबल का तात्पर्य शिक्षा की कल्पना, बहुज्ञता, अनुभवशीलता से नहीं वरन् दृढ़ निश्चय से है । यह यदि आदर्शों के निमित्त प्रयोग किया जाता है तो उसी को संकल्प बल भी कहते हैं । जिसकी संकल्प शक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितनी बलवान है, उसे उतने ही स्तर का बलवान कहना चाहिए ।

किसी-किसी में यह शक्ति जन्मजात भी होती है, पर यह आवश्यक नहीं । उसे अभ्यास से बढ़ाया जा सकता है । छोटे कामों में हाथ डालना और उन्हें पूरा करके ही चैन लेना, यह मनोबल बढ़ाने का तरीका है । एक के बाद दूसरा काम हाथ में लेना और उसकी कठिनाइयों से निपटना यही है वह मार्ग जिस पर चलते हुए मनोबल अर्जित किया जा सकता है । यह विभूति जिसके हाथ लग गई समझना चाहिए कि महामानव बनने का सूत्र उसके हाथ लग गया ।

प्राय: देखा जाता है कि बहुत साधन होते हुए भी लोग साधारण से काम भी नहीं कर पाते । इनके विचार डगमगाते रहते हैं । जो काम हाथ में लिया है वह उचित भी है या नहीं, अपने से बन पड़ेगा या नहीं, ऐसे विकल्प मन में उठते रहते हैं । कच्चा मन एक को छोड़ दूसरा काम हाथ में लेता है । कुछ दिन बाद दूसरा भी हाथ से छूट जाता है और तीसरे को अपनाते हैं । इस तरह अनिश्चय की दशा में शक्ति का अपव्यय होता रहता है । दिशा निश्चित न होने पर कुछ दूर पूर्व को, कुछ उत्तर-पश्चिम-दक्षिण को चलने वाले दिन भर घोर परिश्रम करते रहने पर भी थकान सिर पर ओढ़ते हैं अच्छा यही है कि पहले ऊँच-नीच के हर पहलू पर विचार कर लिया जाए । बुद्धिपूर्वक जो निश्चय निकले उसे दृढ़ता पूर्वक अपनाया जाए ।

काम देखने को शरीर से किया जाता प्रतीत होता है, पर वास्तविकता यह है कि वह मन में होता है । मनोयोग लगा देने से योजना के सब पक्ष सामने आते हैं अन्यथा बाल कल्पनाएँ मन में उठती रहतीं और पानी के बबूले की तरह अस्त-व्यस्त होती रहती हैं । बच्चे सारे दिन उछलकूद करते रहते हैं । इनमें से हर एक क्रिया के पीछे एक उद्देश्य होता है, पर ये उद्देश्य ठहरने नहीं पाते । एक के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाद दूसरी इच्छा सामने आ जाती है और पिछली को छोड़कर अगली में हाथ डालते हैं । इस प्रकार दिन भर में ढेरों मनोरथ सामने आते हैं और वे सभी आधे-अधूरे रहकर अस्त-व्यस्त हो जाते हैं इसी को बाल बुद्धि कहते हैं । इसी प्रकार की राजनीति कितने ही बड़ी आयु के व्यक्ति भी अपनाते देखे जाते हैं । फलतः उनमें से एक भी पूरा नहीं हो पाता ।

काम को पूरा करने के लिए आवश्यक है कि योजना सर्वांगपूर्ण बने । उसके लाभ-हानि पर सांगोपांग विचार किया जाए । साधन जुटाने के लिए जो कार्य वर्तमान साधनों के सहारे किया जा सकना संभव है उसमें हाथ डाला जाए । भविष्य में जितने साधन बढ़ते जाएँ, उतना काम बढ़ाता चला जाए । यह सब तभी बन पड़ता है जब प्रस्तुत योजना पर समग्र मनोयोग एकत्रित किया जाए । अधूरे चिंतन से न पूरी रूपरेखा समझ में आती है और न उसका क्रम बनाने का तारतम्य ठीक से बनता है । दिलचस्पी जितनी जिस काम में रहेगी वह कार्य ठीक तरह बन पड़ेगा । साधनों का नियोजन भी तभी होता है, जब पूरा मन उसमें लग पा रहा है अन्यथा उपयुक्त साधन होते हुए भी उनका उपयोग ठीक तरह नहीं हो पाता । आधे-अधूरे मन से किए हुए काम सदा अधूरे रहते हैं ।

मनोबल का एक अर्थ हिम्मत भी है । जिसमें दिलचस्पी भी शामिल है । किसी काम को रुचि पूर्वक किया जाए तो उसका प्रतिफल दूसरा होगा और बेगार भुगतने की तरह निबटाया जाए तो उसकी उपलब्धि बिल्कुल दूसरी होगी । रुचिपूर्वक बया घोंसला बनाती हैं तो उसकी सुंदरता और मजबूती देखते ही बनती है । मंदबुद्धि कबूतर आड़ी-तिरछी लकड़ियाँ डाल देता है, उसका परिणाम ऐसे घोंसले के रूप में सामने आता है जो जरा सा हवा का झोंका भी बरदाश्त नहीं कर सकता । नौकरों द्वारा कराए गए काम और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मालिक के द्वारा अपने हाथों से किए गए काम में जमीन-आसमान जैसा अंतर होता है । यही कारण है कि मजदूरों द्वारा कराई गई लंबी-चौड़ी काश्त में भी कुछ लाभ नहीं होता वरन् उलटा घाटा हो जाता है । इसके विपरीत जिस खेती को घर के व्यक्ति और मालिक मिल-जुलकर करते हैं, वह सोना उगलती है सेना का इतिहास इसी तथ्य से भरा पड़ा है । जिसके सैनिक भले ही कम रहे हों पर जो हार-जीत को निजी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर लड़ते हैं वे कमाल दिखाते हैं । सफलता उनके चरण चूमती है, किंतु जो नौकर की तरह जान बचाते हुए लड़ते हैं उनकी संख्या बहुत होते हुए भी, साधन बढ़िया होते हुए भी हारते हैं । मनोबल ऊँचा बना रहे तो पीछे हटती हुई सेना पुनः आक्रमण करके अपने खोए हुए इलाके पुनः प्राप्त कर लेती है । इसके अभाव में बेखबरी से ग्रसित सेनापति अपने जीते हुए इलाके भी हाथ से गँवा बैठते हैं ।

संसार में महापुरुषों का अपना विशेष इतिहास है । कोलंबस नेपोलियन आदि के पराक्रम ऐसे हैं कि जिन्हें पढ़-सुनकर दाँतों तले उंगली दबानी पड़ती है । इनकी शारीरिक, मानसिक बनावट में कोई खास विशेषता नहीं थी । वे भी दूसरे लोगों जैसे ही थे पर बढ़े-चढ़े मनोबल के सहारे बड़ी योजनाएँ बनाने और उसे सफल बनाने में जो पराक्रम दिखाया उसके पीछे उनका बढ़ा-चढ़ा मनोबल ही जादू-चमत्कार दिखाता रहा है ।

कितने ही महान आंदोलन संसार में चले और व्यापक बने हैं इनके मूल में एक-दो व्यक्तियों का ही पराक्रम काम करता रहा है । जो अपनी उड़ाई आँधी के साथ अनेकों को आसमान तक उठा ले गए, वे न तो महाबली योद्धा थे और न साधन संपन्न करोड़पति । गाँधी जी ने जो आँधी चलाई उसके साथ लाखों पत्ते और तिनके जैसी हस्ती वाले गगनचुंबी भूमिकाएँ निभाने लगे । ऐसे आंदोलन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय-समय पर अपने देश और विदेशों में उठते रहे और व्यापक बनते रहे हैं । इनके मूल में एक दो मनस्वी लोगों के संकल्प और प्रयत्न ही काम करते रहे हैं । इसी लिए संसार के मनुष्यों में सबसे बड़ा बल मनोबल ही माना गया है । संकल्प और निश्चय तो कितने ही व्यक्ति करते हैं, पर उन पर टिके रहना और अंत तक निर्वाह करना हर किसी का काम नहीं । विरोध-अवरोध सामने आने पर कितने ही हिम्मत हार बैठते हैं और किसी बहाने पीछे लौट पड़ते हैं, पर जो हर परिस्थिति से लोहा लेते हुए अपने पैरों अपना रास्ता बनाने और अपने हाथों अपनी नाव खेकर उस पार तक पहुँचाते हैं, ऐसे मनस्वी बिरले ही होते हैं । मनोबल ऐसे साहस का नाम है जो समझ-सोचकर कदम उठाते और उसे प्राणपण से पूरा करते हैं ।

चाहे व्यक्तिगत जीवन हो चाहे सामाजिक, सफलता के लिए मनुष्य का मनस्वी होना स्वाभाविक है । पैसा कमाने की विद्या तो वणिक बुद्धि को भी आती है । अपराधियों जैसी हिम्मत तो चोर-उचक्कों में भी होती है । आवेश में आकर लड़-झगड़ बैठना तो क्षुद्र स्तर के व्यक्ति भी कर सकते हैं, किंतु जिसमें अपना कोई विशेष लाभ न होता हो, मात्र सिद्धाँतों का परिपोषण अथवा सार्वजनिक हित साधन ही बन पड़ता हो ऐसे कामों में हाथ डालना, उनके मार्ग में आने वाले अवरोधों से टकराना, बिगड़ती हुई परिस्थितियों में धैर्य न खोने और साथियों का उत्साह ढीला न पड़ने देना हर किसी का काम नहीं है । ऐसे लोगों में एक ही विशेषता पाई जाती है, उसका नाम है-मनोबल ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोबल की संजीवनी

संकल्प शक्ति का कल्पवृक्ष :

निश्चय ही मानव की संकल्प शक्ति में अपरिमित सामर्थ्य है । घोर प्रतिकूलताओं के बीच भी यदि मनोबल बना रहे, तो व्यक्ति उसी के सहारे अपनी नैया पार लगा सकता है । चूँकि यह सामर्थ्य अधिकांश व्यक्तियों में प्रसुप्त पड़ी रहती है और दिखाई नहीं देती और उनका उपयोग नहीं करते । ऐसे अनेक घटनाक्रम हैं, जिसमें व्यक्ति मरणासन्न स्थिति में पहुँचकर भी वापस लौट आए व किसी कारणवश कोई विकलांगता भी रह गई हो तो उस दुर्भाग्य को भी वरदान मान लिया । कुछ ऐसी ही घटनाएँ यहाँ वर्णित हैं ।

न्यूजर्सी, अमेरिका का एक ट्रैक्टर चालक एंडीरोबिनसन अपनी १९००० किलोग्राम भारी गाड़ी को लेकर राजमार्ग पर चला जा रहा था । १२ फरवरी १९७१ सबेरे की बात है, सामने से आती हुई एक कार फिसली और सड़क पर लुढ़क गई । उसने ट्रेक्टर को रोका भी-बैलेंस सधा नहीं । वह पुल के जंगलों को तोड़कर बारह मीटर नीचे गिरा और गाटरों में फँस गया । उसका सिर बुरी तरह फट गया । खून की धारा बह रही थी और मांस लटक रहा था, तो भी वह घबराया नहीं, किसी प्रकार अपने को संभाला और निकाला । पंजों के सहारे रेंगता हुआ बाहर आया और पास के अस्पताल में ज्यों-त्यों करके जा पहुँचा । डाक्टरों ने अधिक ध्यान न दिया । ज्यों की त्यों मरहम पट्टी करके घर वापस भेज दिया । इतने पर भी उसका दर्द कम न हुआ ।

अस्पताल से फिर बुलावा आया । दुबारा मुआयना हुआ । उसकी पसलियाँ टूटी मिलीं । खोपड़ी और कूल्हे की हड्डियों में भी भारी टूट-फूट थी । इलाज चलता रहा, पर स्वास्थ्य दिनों-दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिरता ही गया और वह घर लौट आया ।

मस्तिष्क की गहराई तक में आघात पहुँचे थे । धीरे-धीरे उसकी नेत्र ज्योति चली गई । अब वह क्या करे । सोचने लगा उसे अंधों के स्कूल में भर्ती होना चाहिए । सो उसने स्पर्श लिपि के सहारे कुछ पढ़ना-लिखना भी सीख लिया । मन बहलने लगा ।

अब नई मुसीबत खड़ी हुई । दाहिने हाथ ने जबाब दे दिया । उसे लकवा जैसा मार गया । बात यहीं समाप्त नहीं हुई उसके कान भी बहरे हो गए । अब उसने एक कान में लगने वाली मशीन का प्रबंध किया इससे बहुत जोर से बोलने पर वह मतलब की बात सुन लेता था । इन परिस्थितियों में घिरा रहने पर भी वह हताश नहीं हुआ । कुशल पूछने वालों से इतना ही कहता-"ईश्वर को धन्यवाद है, संसार में अनेक संकटग्रस्तों की अपेक्षा अभी भी मैं अच्छा हूँ ।"

बेकार बैठा-बैठा क्या करे ? काम के बिना चैन न पड़ता था । सो उसने पत्नी के घरेलू काम काज में हाथ बँटाना आरंभ कर दिया । इससे पत्नी का समय बचा और वह उतनी देर में कुछ कमा लेने का प्रयत्न करती । सामने पार्क जैसा मैदान था उसमें घास काटने का कार्य उसने प्राप्त कर लिया । उसके लिए उसने एक तरकीब निकाली । बीच-बीच में खूँटा गाड़ा, उसमें रस्सी लपेटी, उसे थामने से यह पता चलता रहता कि कितने घेरे में घास कट रही है । एक घेरा साफ हो जाता तो रस्सी को कुछ और खोलकर घेरा बढ़ा लेता और उसमें घास काटने लगता । इस प्रकार पूरे पार्क की घास मशीन से काटने का अभ्यास हो गया । काम में लगे रहने पर व्यर्थ की चिंताओं से बचा रहता और थक जाने पर गहरी नींद सोता ।

अब उसने एक नया शौक अपनाया । चिड़ियों की बोली की नकल करना । इस कारण कितने ही पक्षी उसके पास दौड़ आते और हाथ रखा भोजन निर्भय होकर खाते । एक अच्छा मनोरंजन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथ लग गया ।

एक दिन कोई मुर्गियों से लदा ट्रक पास में उलट गया । उसकी एक घायल मुर्गी रोबिनसन के घर में घुस आई । टाँगें कट जाने पर भी वह कुछ दिन में अच्छी हो गई और प्यार-दुलार के वातावरण में सहेली बन गई । बिना पैरों के भी किस तरह चला जा सकता है, यह कला सिखाई गई तो मुर्गी ने सीख भी ली । दोनों की खूब पटती । नाम रख दिया टुक-टुक ऐसा ही कुछ वह बोलती जो थी । दर्द उसके सीने में अभी भी होता रहता था, पर भगवान को यही धन्यवाद देता रहता कि मैं जीवित तो हूँ ।

४ जून सन् १९८० की बात है । शाम होते-होते घटा उठी और तेज वर्षा होने लगी । मुर्गी को पास न देख कर वह उसके किसी संकट में फँस जाने की आशंका से उसे ढूँढ़ने घर से बाहर निकला और टुक-टुक की आवाज लगाकर उसे खोजने का प्रयत्न करने लगा । इस प्रयास में वह भीगता भी जा रहा था ।

अचानक आसमान से बिजली गिरी । दिल दहलाने वाली भयंकर गर्जना हुई । चौंधियाने वाले प्रकाश से वह सारा क्षेत्र भर गया । रोबिनसन को भयानक झटका लगा । वह धड़ाम से गिरा और बेहोश हो गया । आधा घंटे में होश आया, तो प्यास से गला सूख रहा था । सारा शरीर काँप रहा था । पड़ोसी का घर सामने था, वह उसी में घुस गया और माँग कर कितने ही गिलास पानी पीता चला गया । प्यास अभी भी शांत नहीं हो रही थी, पड़ोसियों ने उसे घर पहुँचा दिया ।

आश्चर्य यह कि उसकी दृष्टि लौट आई । सामने दीवार पर टँगे पोस्टरों को वह पढ़कर सुनाने लगा । पत्नी ने घड़ी का समय बताने को कहा तो उसने देखकर वह भी सही बता दिया ।

कान में लगने वाली मशीन भी इस झटके में कहीं गिर गई थी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर अब वह बिना उसके ही सुनने लगा । पत्नी से सामान्यकाल की तरह वार्तालाप करते हुए उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न था । सीने का दर्द भी बंद था और लँगड़ाकर चलने में सहायता करने वाली छड़ी की भी आवश्यकता नहीं रह गई थी ।

दूसरे दिन रविवार था वह गिरिजाघर बिना किसी सहायता के पत्नी के साथ पहुँचा और सामान्य लोगों की तरह बैठा तो उपस्थित लोगों को आश्चर्य से चकित रह जाना पड़ा ।

चर्चा दूर-दूर तक पहुँची । टेलिविजन पर उसने अपना विवरण सुनाया और कहा-मुसीबत के दिनों में मैंने उतना जाना जितना कि पिछली पूरी जिंदगी में भी नहीं सीख पाया था । मैंने कभी भी हिम्मत और उम्मीद नहीं छोड़ी । यह घटना मानव की अपराजेय सामर्थ्य, उसकी संकल्प शक्ति का ही सत्यापन करती है और सिद्ध करती है कि कोई भी व्यक्ति प्रतिकूलताओं से जूझकर परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सकता है ।

हांस ह्यूगर एक टैंकर ड्राइवर था और प्रायः दक्षिण-पश्चिम जर्मनी के एक छोटे शहर टेनिनजेन से स्यूलिन एल्युमिनियम फैक्ट्री में एसीटोन लाया करता था । वह अपने इस कार्य में इतना दक्ष हो चुका था कि उसे इस काम में कोई डर या भय का एहसास नहीं होता और इसे भी अपना रुटीन कार्य मानता ।

सितंबर १९६८ के दिन भी उसने छः हजार गैलन एसीटोन युक्त ३५ फुट लंबे विशाल टैंकर को लेकर गंतव्य के लिए प्रयाण किया । रास्ते में किसी प्रकार का कोई अशुभ नहीं घटा, स्यूलिन पहुँचकर उसने टैंकरों को खाली करना आरंभ किया । एक घंटे के भीतर पाँच टैंकर ह्यूगर ने सुरक्षित खाली कर लिए, छठवें टैंकर का एसीटोन जब भूमिगत स्टोरेज टैंक में डाल रहा था तभी अचानक न जाने कैसे उस टैंकर में आग लग गई और उससे पाँच फुट लंबी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्वाला निकलने लगी । इस समय तक छः बज चुके थे फैक्ट्री में दिन की प्रथम पाली समाप्त हो चुकी थी । लोग अपनी ड्यूटी पूरी कर बाहर आ रहे थे और नई पाली के कर्मचारी अंदर प्रवेश कर रहे थे, बाहर लोगों का भारी जमघट था ।

ह्यूगर ने सोचा कि यदि आग होज पाइप के माध्यम से किसी प्रकार स्टोरेज टैंक में पहुँच गई तो क्षण में ही पूरी फैक्ट्री और कर्मचारी राख के ढेर में बदल जाएँगे । फैक्ट्री के पास-पड़ौस के गाँवों को जो हानि उठानी पड़ेगी सो अलग । ज्ञातव्य है कि ऐसीटोन एक कार्बनिक यौगिक है जो भारी ज्वलनशील होता है । अस्तु उसने निर्णय किया कि इस भयंकर दुर्घटना को वह घटित नहीं होने देगा और अपना प्राणोत्सर्ग करके भी हजारों जानों की रक्षा करेगा, यह सब विचार क्षण मात्र में ही ह्यूगर के दिमाग में कौंध गए । एक पल की भी देरी करना उसने दुर्घटना को आमंत्रण करने जैसा ही समझा । अतः तत्क्षण इस दिशा में क्रियाशील हो गया, धधकती लपटों में उसने हाथ डाला और स्टोरेज टैंक का बाल्ब बंद कर दिया, तत्पश्चात् उससे जुड़े हौज पाइप को पृथक किया । हौज पाइप के खुलते ही आग का एक फब्बारा छूटा और देखते ही देखते टैंकर के पिछले भाग को बुरी तरह अपने गिरफ्त में ले लिया । ह्यूगर ने अविलंब ट्रक चालू की और धधकते टैंकर को किसी निर्जन सुरक्षित स्थान में छोड़ देने के लिए चल पड़ा । डेढ़ घंटे पहले वह जिस रास्ते से आया था उसी से लौट रहा था, किंतु वह इस बात से आश्वस्त था कि उसने शहर का पुल पार कर लिया था, क्योंकि उसके बाद जन संख्या विरल होती चली गई थीं, मगर दूसरे ही क्षण उसकी नजर टैंकर के पिछले हिस्से पर पड़ी तो वह गहरे शोक में डूब गया । लपटें निरंतर बढ़ती जा रही थीं और अब उसने दस फुट की ऊँचाई प्राप्त कर ली थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ह्यूमर ने ट्रक की गति बढ़ा दी । गति बढ़ते ही ज्वाला नीची और चपटी हो गई, दमकल के आने तक किसी सं' ाावित दुर्घटना से बचने के लिए उसने गति तेज रखना ही उचित समझा क्योंकि अभी उसे लगातार बढ़ना था । अब तक उसे कोई ऐसा उपयुक्त स्थान मिल नहीं पाया था जहाँ वह ट्रक को छोड़ सके-पास-पड़ौस के क्षेत्र की आबादी अभी भी घनी थी ।

कुछ आगे बढ़ा तो एक रेल रोड क्रासिंग था जहाँ से एक ट्रक गुजर रहा था । ह्यूमर का टैंकर उसके पिछले डिब्बे से टकराते-टकराते बचा ।

कुछ और आगे बढ़ा तो शाम की भीड़ से यातायात पूरा जाम था, उसे अब प्रत्यक्ष मौत सामने दिखाई पड़ने लगी क्योंकि क्षण भर के लिए रुकने से आग केबिन में पहुँच सकती थी मगर वह लाचार था । अब निकलने के सारे रास्ते बंद थे, रोड की एक ओर गहरी खाई थी तो दूसरी ओर भीड़भाड़ युक्त शहर-जाएँ तो किधर ? इस वक्त उसे अपनी जान से अधिक प्यारी और कीमती सैकड़ों निरीह लोगों की जान लग रही थी । चिंता इसी बात की सता रही थी कि वह इस भयंकर अग्निकांड से धन-जन की रक्षा कैसे करे ? किंतु इस समय ह्यूगर मजबूर था, विवशता में गाड़ी रोकनी पड़ी । गाड़ी रुकते ही ज्वाला दुर्धष बनी और ह्यूगर को निगलने की हर चंद कोशिश करने लगी, पर ह्यूगर अपने दीमक का सा धैर्य का परिचय देता रहा । इस बीच वह लगातार हार्न बजाता रहा । अल्प विराम के बाद मैदानी भाग की ओर जैसे ही भीड़ कुछ छँटी उसने उसी ओर ट्रक दौड़ा दी । गाड़ी मैदानी भाग से होते हुए शहर से दूर देहात की ओर भागने लगी । ह्यूगर अभी भी अपने इस निश्चय पर दृढ़ था कि भले ही इस भाग-दौड़ में उसे अपने प्राणों की आहुति देनी पड़े मगर जनहानि को वह हर हालत में रोकेगा और इसी लक्ष्य की पूर्ति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए वह अपनी गाड़ी सड़क पर किसी जनहीन स्थान की तलाश में भगाए जा रहा था कि उसके मार्ग में किसी प्रकार का अवरोध न आए । ट्रक निरंतर दौड़ता जा रहा था, परंतु ह्यूगर को सड़क के किसी ओर कोई ऐसा स्थान नहीं मिल पा रहा था जहाँ से वह निकलकर किसी मैदानी गाँव में प्रवेश कर सके । रोड के दोनों ओर गहरे खड्ड थे, ऐसी स्थिति में संतुलन का जरा भी बिगड़ना ह्यूगर के लिए मौत का बुलावा हो सकता था । इसी बीच बारिश शुरू हो गई । इससे ह्यूगर की परेशानी और बढ़ गई । हल्का ब्रेक भी उसकी जान खतरे में डाल सकता था, मगर इसकी परवाह किए बिना वह लगातार बढ़ता ही जा रहा था, अभी कोई उपयुक्त स्थान उसे मिल नहीं पाया था ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अब वह एक ऐसे स्थान से गुजर रहा था जहाँ ट्रैफिक बहुत बिरल मगर दुर्भाग्य था कि यहाँ भी उसके पीछे कारों की एक टुकड़ी भागी चली आ रही थी मानों पुच्छल तारे की पूँछनुमा ह्यूगर के ट्रक से वे सम्मोहित हो खिंचे चले आ रहे हों । इस स्थिति में ट्रक को रोकना अथवा गति कम करना कारों के लिए खतरनाक हो सकता था अतः वह गाड़ी दौड़ाता ही रहा । १२ मील तक वह उसी गति से बढ़ता रहा तब जाकर उन कारों से पीछा छूटा ।

अब तक उसका दाहिना हाथ स्टयरिंग व्हील को पकड़े-पकड़े अकड़ चुका था, बाँये हाथ की अँगुलियाँ हार्न दबाते-दबाते सुन्न पड़ चुकी थीं, आगे काम करने से सारे अंग-अवयव इंकार कर रहे थे । पसीने से वह तर-बतर हुआ जा रहा था । उम्मीदें समाप्त हो गई थीं, वह निराश हो चला था कि तभी उसे अपनी गाड़ी के दर्पण में नीली रोशनी खुलती-बुझती दिखाई पड़ी । दो फायर ब्रिग्रेड इंजिन उसके पीछे भागे चले आ रहे थे । ह्यूगर की कुछ आशा बँधी, दमकलों के इशारे पर उसने गति कम कर दी । एक दमकल ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगे बढ़कर गाड़ी रोक दी, फलतः ह्यूगर को भी ब्रेक लगाना पड़ा । एक झटके से गाड़ी रुकी, वह नीचे कूदा और एसीटोन चिल्हाता हुआ भागा । दमकल सावधान हो गए, उनने अग्नि शामक पाउडर और हजारों गैलन पानी की सहायता से बीस मिनट के कठिन संघर्ष के उपरांत उस पर काबू पाया । आग बुझ चुकी थी और रक्ततप्त टैंकर ठंडा हो गया था ।

ह्यूगर इस अग्नि परीक्षा में सफल रहा किंतु डेढ़ घंटे के इस जीवन-मौत के झूले में झूलते हुए उसकी सारी शक्ति चुक चुकी थी वह पूरी तरह बेहोश हो गया था, तत्काल उसे अस्पताल ले जाया गया-जहाँ कुछ दिनों के उपचार के बाद ही वह स्वस्थ हो पाया ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जिजीविषा की चमत्कारी शक्ति

एक घटना १९ वीं सदी के आरंभ की है । लंदन की टेम्स नदी से जूलियन नामक एक जहाज बैंकाक के लिए रवाना हुआ । उसमें पत्थर, कोयला एवं अन्य सामान भरे हुए थे । जहाज अभी अपनी यात्रा का एक घंटा भी पूरा नहीं कर पाया था कि मुश्किल में फँस गया । उसके निचले तल में रखे कोयले में न जाने कैसे आग लग गई । आरंभिक दौर में इसकी जानकारी नहीं मिल सकी, अतः नाविकों द्वारा तत्काल कोई उपचार भी नहीं किया जा सका । ऐसी स्थिति में आग अंदर सुलगती और फैलती रही, जब इसका विस्तार बढ़ा तो लपटें भी बाहर निकलने लगीं । तभी कप्तान को इस अग्निकांड की जानकारी मिली, किंतु अब तक आग निचले तल में बुरी तरह फैल चुकी थी । कप्तान को चिंता हुई कि यदि आग को जल्दी ही नियंत्रित नहीं किया जा सका तो जहाज के साथ उसके कीमती सामान भी जलकर नष्ट हो जाएँगे अतः सबने मिलकर उसे बुझाने का प्रयास आरंभ किया । उसमें पानी डाला जाने लगा किंतु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पानी डालने से उसकी भाप और धुएँ से नाविकों का दम घुटने लगता, अस्तु यह उपक्रम भी देर तक नहीं चल सका और बीच में छोड़ना पड़ा । इस समय जहाज आंध्र महासागर में प्रवेश कर चुका था । यह सागर अपने भयंकर तूफानों के लिए प्रसिद्ध है । नाविकों को अब तक सिर्फ अग्नि की भयंकरता का ही सामना करना पड़ रहा था, पर इस सागर में आते ही उन पर एक साथ दो-दो विपत्तियाँ टूट पड़ीं । आग सर्वनाश पर तुली थी, तो सागर की तूफानी लहरें उन्हें लील जाना चाहती थीं । बचें तो किससे और कैसे ? हर पल उनके लिए परीक्षा की घड़ी सिद्ध हो रही थी ।

अनुभवी बूढ़े कप्तान ने सोचा, यदि ऐसे वक्त मनोबल खोया तो सभी की जान चली जाएगी, अतः वह अन्य साथियों को ढाँढस बँधाता रहा और अभियान भी जारी रखा । लहरें इतनी ऊँची और तेज हो रही थीं कि अब पानी भी जहाज में प्रवेश करने लगा । यह देख नाविकों ने पंप चालू कर दिया और उससे बराबर पानी निकलता रहा । इधर आग भी दुर्धष बनती जा रही थी, इसकी प्रचंडता से लंगर और मस्तूल समुद्र में गिर गए । जंजीरें पिघल गईं और अब डेक भी जलने लगा था, यदि वे चाहते तो लाइफ बेल्ट और छोटी नौका के सहारे अपनी जान बचा सकते थे, मगर अभी भी आशा थी कि शायद वे अपने प्रयत्नों से जहाज को पूरी तरह नष्ट होने से बचा सकें और सामानों की रक्षा कर सकें, अतः वे अपने अभियान में जुटे रहे परंतु उसका कोई प्रतिफल निकलता दिखाई नहीं पड़ रहा था । तभी सामने से एक स्टीमर आते दीखा । तट निकट ही था । इस समय तक इस विकट स्थिति में भी वह लगातार आगे बढ़ता ही रहा था और अब बैंकाक तट के काफी निकट आ चुका था । स्टीमर के पहुँचने पर दोनों कप्तानों ने सलाह की कि जहाज के सभी लोग स्टीमर में आ जाएँ और उसे रस्से द्वारा स्टीमर के सहारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाँधकर बंदरगाह तक पहुँचाया जाए । ऐसा ही किया गया, दो घंटे की कठिन यात्रा के बाद जहाज बैंकाक बंदरगाह पहुँचा जहाँ अग्नि शमन दस्ते ने एक घंटे के भीतर आग पर काबू पा लिया तथा उसमें लदे सामानों को सुरक्षित उतार लिया गया ।

ऐसा वस्तुतः कप्तान और नाविकों के मनोबल और जिजीविषा के कारण संभव हो सका । यदि उनमें मनः संतुलन नहीं होता, जीवन बचाने की चिंता होती तो शायद वे अपने जहाज को खो देते एवं मनोबल गँवा दिया होता तो स्वयं भी समुद्र की लहरों में समा गए होते ।

समुद्र के अटलांटिक क्षेत्र में एक जहाज पोलरस बर्फ में जा फँसा और एक चट्टान से टकराकर टूट गया । जीवित बचे १९ नाविकों ने एक बहते हुए हिमखंड पर सवारी गाँठी और मछलियाँ पकड़ते व खाते जाते । उसी चट्टान पर कई दिन काटते तथा आगे ढकेलते हुए बर्फ की चट्टान को नाव बनाकर वे १९६ दिन में १२०० मील की यात्रा करके लैब्रैडोर तट पर पहुँचे और अपने प्राण बचाने में सफल रहे । बर्फ से आच्छादित उस हिम क्षेत्र में जहाँ प्राण वायु भी बड़ी दुर्लभता से उपलब्ध होती है उन्हें भरपूर मात्रा में अन्तःशक्ति की प्रेरणा मिलती रही, मनोबल बना रहा एवं वे प्रतिकूलताओं से जूझते हुए राह बना सके ।

जुलाई १९५७ का एक प्रसंग है । पैराटुपर-विंग (जर्मनी) के कमांडर लै० कुर्त एंजील ने जहाज से उड़ान भरी । दुर्भाग्यवश विमान में आग लग गई, १५०० फीट ऊँचाई से गिरे एंजील का पूरा शरीर चकना चूर हो गया । अस्पताल में हुए परीक्षणों के उपरांत डाक्टरों ने घोषणा की कि अब उन्हें बचा सकना बिल्कुल संभव नहीं है । इतनी असह्य पीड़ा में भी उनने हिम्मत न हारी । एंजील ने चिकित्सकों के सामने बड़े साहस एवं विश्वास के साथ कहा-'मैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मर नहीं सकता, अभी मुझे बहुत काम करने हैं । आप सभी अपना कर्त्तव्य पूरा करें । दो महीने बाद वे अपनी पूर्व स्थिति में आ पहुँचे तो चिकित्सकों ने उनकी जीजीविषा एवं साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की । व्यक्ति अपने हाथों स्वयं अपनी मौत को बुला सकता है एवं प्रचंड मनोबल के सहारे उसे परे भी भगा सकता है, इसका यह एक जीवंत उदाहरण है ।'

सन् १९६५ की एक घटना है अमेरिका का एक हवाई जहाज समुद्र पर उड़ते हुए आग लगने के कारण जल गया । उसका पायलट समुद्र में कूद पड़ा । इतनी ऊँचाई से कूदने और समुद्र के जल पर गिरने के कारण उसे चोट भी आई फिर भी बिना घबराए वह तैरता रहा और बुरी तरह चोट खाए शरीर को खींचता-खाँचता ४० घंटे तक अविराम तैरते हुए किनारे पहुँचा । किनारे पहुँचने पर कुछ लोगों ने उसे देखा तो अस्पताल में भरती कराने ले गए । इतनी अस्वस्थ और आहत दशा में जब लोग उसे इमरजैंसी वार्ड में सर्जरी हेतु ले गए तो जैसे ही सुरक्षा के प्रति उसका मन आश्वस्त हुआ, शरीर की जागृत और सक्रिय शक्तियाँ पूर्व स्थिति में जा पहुँची और निमोनियाँ, थकान, चोटों के दर्द और भूख के कारण वह बेहोश हो गया । उसकी हालत शारीरिक दृष्टि से इतनी गंभीर थी कि डॉक्टरों ने उसके अब-तक बचे रहने पर आश्चर्य व्यक्त किया । पाइलट जब वैसी परिस्थितियों में नहीं मरा तो अस्पताल में भर्ती हो जाने पर तो उसकी मृत्यु हो जाने का कोई प्रश्न ही नहीं था । वह जीवित भी रहा स्वस्थ होने पर पुनः उड़ान भरने लगा । कभी-कभी अचानक छोटी सी काया में अपरिमित सामर्थ्य न जाने कहाँ से उद्‌भूत होने लगती है व उस कार्य को करने पर व्यक्ति स्वयं आश्चर्य चकित हो उठता है । विगोरीज, फ्रांस के एक शिकारी बैरन क्रिस्टोफरसन के घोड़े की टाँग आखेट की उछल-कूद में टूट गई । घोड़े को उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दयनीय स्थिति में छोड़ना क्रिस्टोफर ने उचित न समझा । उसने ४२५ पौंड भारी घोड़े को कंधे पर उठाया और डेढ़ मील की दूरी तक उतना भार वहन करते हुए उसे पशु चिकित्सालय तक पहुँचाया । अपने भारवाहक के प्रति सहानुभूति ने ही उसके अंत: के साहस बल को उभारा और उससे यह पुरुषार्थ संपन्न करा डाला ।

इटली के एक प्रमुख शहर गिएरुपे में फिनोज पी वेग नामक फोरमैन बारूद के एक कारखाने में काम करता था जहाँ धातुओं की परतों में बारूद के मिश्रण से छेद किए जाते थे । फिनोज पी वेग एक बरमे के पास जो कि चार फीट लंबा और तेरह पौंड वजन का था, काम कर रहा था । अचानक कोई खराबी के कारण बरमा बड़े जोर से उचटा और वेग की आँखों के नीचे भाग को छेद कर मस्तिष्क की हड्डियों को तोड़ता हुआ बाहर निकल गया । उसे अचेत अवस्था में ही एक मील दूर अस्तपताल ले जाया गया, जहाँ चिकित्सकों ने उसकी मरहम पट्टी बड़ी ही निराशा से की, क्योंकि वेग के बचने के कोई आसार उन्हें दिखाई नहीं दे रहे थे । किंतु रात के दस बजे जब वह होश में आकर बातें करने लगा तो चिकित्सकों ने पूरे मनोवेग से चिकित्सा करना प्रारंभ किया और तीन माह में ही वह पूर्ण स्वस्थ होकर घर चला गया ।

चिकित्सकों की अंतिम रिपोर्ट आज के मूर्धन्य चिकित्सकों के लिए अध्ययन व आश्चर्य का विषय है । हावर्ड मेडिकल कालेज में वेग की टूटी खोपड़ी के अस्थिखंड व पदार्थ, कागजात व वह बरमा भी सुरक्षित रखा है जो कि खोपड़ी को तोड़ता हुआ निकल गया था । शरीर विज्ञानियों को सहसा विश्वास नहीं होता कि इतने भयानक मस्तिष्कीय आघात के बाद भी कोई व्यक्ति जीवित रहकर भी अपना सामान्य जीवनक्रम चला सकता है ।

साहस के प्रसंगों की श्रृंखला में एक सन् १८९१ की घटना है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अंग्रेज मछियारा अपने दल-बल के साथ एक विशालकाय ह्वेल मछली का, जो कि आकलैंड द्वीप के पास दिखाई दी थी- शिकार करने की चेष्टा करने लगा । दो नावों पर सवार मछुआरों ने उस पर भाले से आक्रमण किया । ह्वेल ने पलटा खाया तो एक नाव उसकी पूँछ के नीचे आ गई और नाविक डूब गया । दूसरे जेम्स वार्टली को ह्वेल निगल गई, साहसी जेम्स वार्टली ने अपना मनोबल नहीं खोया, उसने अपने जेब से शिकारी चाकू को प्रयत्न करके निकाला और पेट में जकड़े रहने पर भी उसने मछली के पेट को काटना प्रारंभ किया । कुछ घंटों के परिश्रम के बाद वह सफल हुआ । दो दिन बाद अचेत अवस्था में समुद्र की सतह पर से निकाला और अस्पताल पहुँचाया, जहाँ चिकित्सकों के तीन सप्ताह के प्रयत्न के बाद उसकी बेहोशी टूटी । मछली के पेट में उसका शरीर बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गया था, उसे पूरी तरह स्वस्थ होने में दो महीने लगे । अपने धैर्य और मनोबल के कारण ही बर्टली जीवित ह्वेल के पेट में से जीवित निकल सका । प्रेस फोटोग्राफर्स व इंटरव्यू लेने वालों के लिए वह एक अजूबा बन गया था । उसने प्रमाणित कर दिखाया कि यदि इच्छा शक्ति हो तो किसी भी खतरे से निबटा जा सकता है ।

साहस ही बनाता है मनुष्य को अपराजेय

सामान्य मनुष्य सदैव साधन और अवसर की तलाश करते हैं । किंतु जो संकल्प और साहस के धनी हैं, वे ऐसे कदम उठाते हैं जिससे विदित होता है कि इनके प्रयासों के पीछे न जाने कितनों का बाहुबल, बुद्धिबल और सहयोग काम कर रहा है । अनेक ऐतिहासिक प्रसंग एवं आख्यान इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं ।

हनुमान बाल ब्रह्मचारी थे । उनका पराक्रम सर्व विदित है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्वत उठाने, समुद्र लाँघने, लंका जलाने जैसे असंभव कार्य जो उनने सम्पन्न कर दिखाए, मात्र मिथक नहीं हैं । लंका दहन के उपरांत वे ताप मिटाने के लिए समुद्र में कूदे, तो उनके पसीने को मछली निगल गई । कथा के अनुसार उस पसीने की शक्ति वह मछली हजम नहीं कर पाई और उससे मकरध्वज की उत्पत्ति हुई । हनुमान से जुड़ी पौराणिक कथाएँ, ग्रीक साहित्य में हरक्यूलिस से जुड़ी पौराणिक कथाएँ एवं कृष्ण के अग्रज बलराम के शौर्य-पराक्रम की गाथाएँ उस अपरिमित पराक्रम का परिचय देती हैं जो मानवी काया में असीम संभावनाओं के रूप में रोम-रोम में कूट-कूट कर भरा है । महर्षि दयानंद ने अपने शक्ति बल से संयम की महत्ता जानने के उत्सुक एक जमींदार की घोड़ों से जुती बग्घी को एक हाथ से रोक कर बता दिया था कि विभूतियों का सही उपयोग किया जाए, असंयम के छिद्रों से बहाया न जाए तो मनुष्य की शक्ति कितनी प्रचंड हो सकती है ।

अमेरिका के रिचर्ड ने अपनी काया की क्षमता को इतना विकसित कर लिया था कि बड़े से बड़े हथौड़े, भारी बजनी लकड़ी के लट्ठे, हाथी, तोप के गोले उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते । सैनफ्रांसिसको के ६ भारी-भरकम पहलवान घूँसे मारते-मारते थक गए किंतु रिचर्ड ऐसे बैठा रहा जैसे उसकी मालिश की जा रही है । १९६४ में १०० पौंड वजन तक के गोले का अभ्यास था किंतु १९६६ में उसने एक प्रदर्शन में तोप के मुँहाने के सामने खड़े होकर १५० पौंड वजन का गोला दगवाया, किंतु टेनिस की गेंद की तरह गोला छिटककर दूर जा गिरा और रिचर्ड अविचल खड़ा रहा । इस घटना के बाद वह इस्पात का आदमी कहा जाने लगा ।

निश्चय ही मनुष्य की संकल्प शक्ति का पारावार नहीं । यदि वह शारीरिक क्षमता बढ़ाने में ही अपने को लगा दे तो ऐसा दैत्य बन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है जिसे देखकर लोग आश्चर्य से चकित रह जाएँ । दृढ़ संकल्प के साथ उद्यम, आशा और साहस का संयुक्त समन्वय हो तो वह उछलकर चंदगीराम बन सकता है । जुकाम से सदा ग्रस्त रहने वाले से विश्व विख्यात सेन्डो बन सकता है । वह संकल्प शक्ति के बल पर माँस-पेशियों को लोहे जैसी बना सकता है । साँस रोक सकता है और हृदय की धड़कन पर नियंत्रण करके समाधिस्त हो सकता है । मुख सज्जा जितनी समस्त श्रृंगार साधनों से मिलकर हो सकती है, उससे असंख्य गुनी अधिक सुंदरता वह मुस्कान, मस्ती और खिलखिलाहट के आधार पर अर्जित कर सकता है ।

इंग्लैंड में एक महिला जन्मी थी, जिसके शरीर पर ज्वलनशील पदार्थ का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था । नाइट्रिक एसिड को कुछ देर मुँह में रखकर जब उसने एक लोहे पर थूका तो उसमें लपटें निकलने लगीं । उबलते तेल को मुँह में रखे रहना, पिघले मोम को पानी की तरह मुँह में रखकर ऊपर से सील करवा देना, उबलते जस्ते को मुँह में डालकर उसे सिक्के के रूप में बदल देना, उसके लिए नितांत आसान था । उसके विविध ऐसे प्रदर्शनों से यह सिद्ध हो गया था कि उसका शरीर एकदम ज्वलनशील नहीं है न ही ज्वलनशीलता का उस पर किंचित प्रभाव पड़ता है ।

इतिहास में अनेकानेक व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने असाधारण साहसिकता का प्रदर्शन कर जीवन भर योद्धा की तरह जीवन जिया । परिस्थितियाँ उन्हें कभी भी झुका नहीं सकीं ।

फ्रांस के न्यूर्स प्रदेश का एक कप्तान मैलर मुस्टैमे जीवन भर युद्धों का अग्रिम मोर्चा सँभालता रहा उसने १२२ युद्धों में भाग लिया और प्रत्येक में कई बार गंभीर घाव लगे । सभी का वह सामना करता रहा और अच्छा होता रहा । उसकी मृत्यु १३४ वर्ष में हुई । अठारहवीं सदी में एक फ्रांसीसी जनरल के जीवन में भी ऐसी ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घटनाएँ घटीं । वेपटिस्टे मान्टमारिन का जीवन अपने ढंग का अनौखा था । उन्होंने २० वर्ष की आयु में सेना में प्रवेश लिया । ७५ वर्ष की आयु होने पर सन् १७७९ में मरे । इस बीच वे पूरे ५५ वर्ष सेना में विभिन्न पदों पर काम करते रहे । वे युद्ध मोर्चों पर पाँच बार भयंकर रूप से घायल हुए और मृतक घोषित किए जाते रहे । हर बार वे कब्रिस्तान पहुँचने से पूर्व ही जी उठे । उनका सारा शरीर अनेकों आपरेशनों से बेतरह कटा-फटा था । उन्होंने मरने तक कभी भी हिम्मत नहीं हारी । उन्हें फ्रांस का राणासांगा कहा जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी ।

आस्ट्रिया के एक जनरल काउन्ट एंटम ने अपने देश की सेना में ४७ वर्ष तक काम किया । इस बीच उन्होंने ८९ लड़ाइयाँ लड़ीं । इनमें उन्हें ८४ भयंकर और सैंकड़ों छोटे घाव लगे । उनकी मृत्यु युद्ध मोर्चे पर ही हुई । मरते समय उनके चेहरे पर कोई विषाद नहीं था । राष्ट्र के लिए संघर्ष करने-मरने-खपने वाले कभी अशांत स्थिति में शरीर नहीं छोड़ते ।

साहस कहीं आसमान से नहीं बरसता । यह तो सदैव अंत:करण में विद्यमान है । सूझबूझ, दूरदर्शिता, प्रत्युत्पन्नमति साहसियों को उचित संबल देती व श्रेय-सम्मान का अधिकारी बनाती है । फ्रांस के जनरल डुवेले की सेना एक बार किले में घिर गई । राशन भी समाप्त हो गया । शत्रु के चालीस हजार सैनिकों को चकमा दिया गया । रात के सघन कुहासे में घोड़ों पर आटे के बोरे इस तरह बाँधे गए कि वे दैत्याकार सैनिक लगने लगे । साथ ही जानवरों के सींगों पर मशाल बाँधकर रात भर उनसे गश्त लगवाई गई । इतना अपार सेना बल देखकर उनसे लड़ने की शत्रु सैनिकों की हिम्मत न पड़ी और वे भाग खड़े हुए । हार-जीत में बदल गई ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधन नहीं साहस प्रधान :

साधन बड़ा या साहस इसका निर्णय ढूँढ़ने के लिए नार्वे के एक उत्साही युवक थोर हेयर ने एक उदाहरण लोगों के सामने प्रस्तुत किया । यह उत्साही युवक साहस को प्रधान मानता और कहता कि साहसी या तो साधन प्राप्त कर लेता है अथवा न्यूनतम साधनों से भी आगे बढ़ने और सफलता पाने का रास्ता निकाल लेता है ।

थोर का प्रयोग यह था कि सरकंडे की नाव के सहारे भी कठिन दीखने वाली समुद्र यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की जा सकती है । इस लोहे के विशालकाय यंत्र सज्जित जहाजों के जमाने में सरकंडे जैसे दुर्बल साधनों से बनी नाव की क्या तुलना हो सकती है । पर उसके उपयोग से यह तो साबित किया जा सकता है कि मनुष्य का पुरुषार्थ और मनोयोग इतना प्रबल है कि साधन न होने पर भी उसके द्वारा साधन संपन्नों जैसा कृत्य दिखाया जा सके ।

नार्वे के उपरोक्त युवक ने इथोपिया की कैड झील में काम करने वाले मछियारों की सहायता से पहली सरकंडों से बनी नाव बनाई । यह उतनी अच्छी नहीं बनी और लक्ष्य को पूरा न कर सकी । वह ४३५२ मील चलकर अटलांटिक महासागर में अपना दम तोड़ गई, पर इससे थोर निराश नहीं हुआ । आरंभिक असफलताओं से उसका मन जरा भी छोटा नहीं हुआ । हिम्मत हारने की तो इसमें बात ही क्या थी ? सफलता एक बार के प्रयत्न से मिल जाया करे तो फिर उसे कोई भी प्राप्त कर लिया करे । साहस की परीक्षा तो असफलता की कसौटी पर ही होती है ।

हेयर डेहल ने दूसरी नाव लैंटिन अमेरिका के बोलीविया क्षेत्र में स्थित नितचाचा झील में काम करने वाले मछियारों की सहायता से बनाई, यह भी सरकंडों की ही थी । इस नाव में विभिन्न देशों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सात अन्य यात्री भी अपने सामान सहित सबार हुए। १७ मई १९७० को मोरक्को (अफ्रीका) के साफी बंदरगाह से यह नाव रवाना हुई और १२ जुलाई १९७० को दक्षिणी अमेरिका के वारंडोस क्षेत्र के ब्रिज टाउन बंदरगाह पर पहुँची।

ब्रिज टाउन पहुँचने पर इस सरकंडे की नाव पर उतना लंबा और इतना दुस्साहस पूर्ण यात्रा सफल करने वाले दल की अगवानी बीस लकड़ी की नावों ने पंक्तिबद्ध होकर बड़े भावपूर्ण वातावरण में की। बंदरगाह दर्शकों की भीड़ से खचाखच भरा हुआ था। स्वागत की आवश्यक सजधज लोगों ने पूरे उत्साह के साथ की थी। दर्शकों को इस निष्कर्ष पर पहुँचने में सहायता ही मिली कि अदम्य साहस, स्वल्प साधनों से भी मनुष्य बड़ी सफलताएँ प्राप्त कर सकता है, जबकि मनोबल और पुरुषार्थ के अभाव में विपुल साधन रहते हुए भी असफलताएँ ही हाथ लगती हैं। उक्त सरकंडे की नाव ओसलो (नार्वे) के कोनटिकी संग्रहालय में अभी भी सुरक्षित है, जो दर्शकों को साहस एवं मनोबल की प्रचंडता का महत्व समझाने के लिए प्रेरित करती है।

जलमार्ग द्वारा भू-परिक्रमा करने वाले वास्कोडिगामा और कोलंबस की साहसिक गाथाएँ तो प्रसिद्ध ही हैं। संसार में ऐसे भी दुस्साहसी व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक प्रगति के आरंभिक दिनों में छोटे-मोटे जलयानों या गुब्बरों से ध्रुव प्रदेशों की यात्राएँ कीं। भले ही आज उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों पर यात्रा आसान हो गई है। विज्ञान ने प्रतिकूल वातावरण में रहने के साधन जुटा लिए हैं एवं भाँति-भाँति के वैज्ञानिक अन्वेषण वहाँ सम्पन्न किए जाने लगे हैं, किंतु इस सदी के प्रारंभ में जब कि इन दोनों ही ध्रुवों की फोटोग्राफी का जरा भी अंदाज न था कितने ही साहस के धनी व्यक्तियों ने यात्रा की, ज़ोखिम उठाते हुए जानने का प्रयास किया कि ये कहाँ हैं व वहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितियाँ कैसी हैं ? उत्तरी ध्रुव की सर्व प्रथम यात्रा डा. फ्रेडरिक अल्बर्ट कुक ने की थी । इस अमेरिकन वैज्ञानिक ने अपने एस्किमो साथी व २६ कुत्ते साथ लिए । यह यात्रा उसने २३ मील प्रतिदिन के हिसाब से पूरी की । २१ मार्च १९०८ को वह चला और ४२ दिन में नार्थ सी के रास्ते चलकर वह एबरडीन (स्काटलैंड) लौट आया । इसी प्रकार दक्षिणी ध्रुव विजय का प्रथम श्रेय ब्रिटिश रॉयल नेवी के कैप्टन जेम्स कुक्स को जाता है । वे कुछ जलयानों की सहायता से चले । बाद में कुत्ते जुती गाड़ियों पर ५३ दिनों में अपना सफर पूरा कर वापस केप ऑफ गुडहोप होते हुए यू० के० लौट आए ।

अलबर्ट कुक से भी पूर्व सन् १७८३ में फ्रेंच वैज्ञानिक प्रो. एडविन चार्ल्स ने पहला गुब्बारा बनाया । इसके बाद उसकी क्षमता और आकृति में क्रमशः सुधार होता गया । उस समय का विकसित गुब्बारा जिसका नाम 'जैपलीन' था को लेकर कुछ दुस्साहसी युवक कठिन यात्रा के लिए चल पड़े ।

उस योजना का संचालन किया जर्मन डा० उल्सवीन ने जैपलीन में कुल ५६ आदमी सवार थे, ४० चलाने वाले और १६ अनुसंधान करने वाले । गुब्बारा एक छोटे फुटवाल मैदान के बराबर था और गिरजेघर जैसा ऊँचा जिसमें खटोले जैसी लटकनें थीं, यात्री उन्हीं पर बैठते थे ।

लेक कांसटैंस से उड़कर वह गुब्बारा जर्मनी, स्वीडन, एस्थोनिया, फिनलैंड, रूस की सीमाएँ पार करते हुए ध्रुव प्रदेश पर पहुँचा । एल्फोरा अंतरीप से लेकर सुविस्तृत ध्रुवीय क्षेत्र पर उड़ानें भरीं और चित्र-विचित्र फोटो लिए । लगभग एक सप्ताह तक वह गुब्बारा उड़ा-उस प्रारंभिक साहस भरी यात्रा से अर्जित उपलब्धियाँ श्रेय की उतनी ही अधिकारी हैं जितनी कि आज के कंप्यूटर युग की ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिकूलताओं के रहते हुए भी प्रगति संभव

यह आवश्यक नहीं कि किसी को उन्नतशील बनने के लिए उसके पास समुचित साधन चाहिए अथवा उसके अभिभावकों द्वारा उसके लिए शिक्षा तथा सुविधा जुटाने का प्रबंध किया ही जाए । यह हों तो अच्छी बात है, किंतु इनका अभाव रहने पर भी मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति एवं तत्परता के बल पर प्रतिकूलताओं को भी अनुकूलताओं में बदल सकता है और साधारण स्थिति की रुकावटों को अपने मनोबल के आधार पर दूर करते हुए उन्नति के शिखर तक पहुँच सकता है ।

डिजराइली का कथन है कि 'सफलता का कुछ रहस्य उस कार्य में दृढ़ता और मनोयोगपूर्वक जुटे रहना है ।' कुछ लोगों का कहना है कि भौतिक सफलता अर्थहीन और बकवास है, सफलता के प्रतीक के रूप में धन का अपना महत्व है । लेखक, संगीतज्ञ, चित्रकार, मूर्तिकार, कृषक अथवा मजदूर पेटभर भोजन तो सबको चाहिए, किंतु रचनात्मक प्रवृत्तियों का लक्ष्य मात्र धनोपार्जन नहीं होना चाहिए । विश्व के अनेक मेधावी ऐसे हैं जो अभावों में जन्में, असुविधाओं में पले और संघर्षों में जीकर भी सफलता के लक्ष्य तक जा पहुँचे ।

सफलताओं के लिए सुविधाएँ ही आवश्यक हों ऐसी बात नहीं है । जिन्हें जीवनभर सुविधाएँ नहीं मिलीं और गरीबी व अभाव में जीकर भी उन्होंने ऐसे कार्य किये जो सुविधाओं में रहकर नहीं कर सके । सफलता के लिए सफलता की कामना और दृढ़ इच्छा ही मुख्य है ।

अंध कवि होमर यूनान का विख्यात भिखारी था, किंतु अपनी कृति से आज भी अमर है । इसी प्रकार रोम का महाकवि विर्जिल साधारण बाबर्ची का पुत्र था । अपने ढंग की बेजोड़ कथाओं का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रचनाकार ईसप एक कुरूप–काला गुलाम था । डिमास्थेनस सिकलीगर परिवार में जन्मा था, उसका पिता छुरी–चाकू बनाकर आजीविका चलाता था, किंतु डिमास्थेनस के भाषणों को आज भी याद किया जाता है ।

सुविख्यात पुस्तक 'डान क्विक्स्कोट' का लेखक सर बैटेस सेना का साधारण सिपाही था। अंग्रेजी का महान कवि कीट्स एक साधारण रईस का लड़का था । उसने अपने जीवन की शुरूआत दवा बिक्रेता के यहाँ नौकरी करके आरंभ की । होमर की कृतियों का अनुवादक एलेक्जेन्डर पोप एक व्यवसायी का पुत्र था । कवि एके साइड के पिता का व्यवसाय कसाई का था । स्काटलैंड के राष्ट्रकवि राबर्ट वर्नस ने अपना जीवन हलवाहे से आरंभ किया । पेराडाइज लॉस्ट के लेखक मिल्टन एक स्कूल में अध्यापक थे विख्यात कोषकार जानसन के पिता साधारण पुस्तक बिक्रेता थे । पामेला और कैरिमा जैसे रोमांटिक उपन्यासों के विख्यात लेखक सैमुएल रिचार्डसन के पिता साधाण बढ़ई थे ।

अमेरिका की खोज करने वाला कोलंबस जुलाहा था । बेंजामिन फ्रेंकलिन जो बाद में अमेरिका के राष्ट्रपति बने–छपाई का काम करते थे । पोप सिक्सटस पंचम कभी सूअर पालने का काम करता था । कलाकार होगराथ बर्तनों पर पच्चीकारी का काम भी करते तथा उन्होंने रेशमी वस्त्र विक्रेता के यहाँ नौकरी भी की । अभी प्रचलित पुच्छल तारे के आविष्कारक 'एडमंड हैली' जिसके नाम से यह प्रसिद्ध है–के यहाँ साबुन बनाने का धंधा होता था । उसमें से निकलकर वह एक ऐस्ट्रोलोजर बन गया । हरशल एक गरीब संगीतकार था । रिचर्ड आर्क राइट बहुत दिनों तक हज्जाम का कार्य करते थे । विख्यात वकील ब्लैक बुनकर का पुत्र था ।

इतिहास के पन्ने ऐसे प्रतिभाशालियों की पुरुषार्थ गाथाओं से भरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़े हैं । जिनने अपने संकल्प पुरुषार्थ के बल पर अपने को ऊँचा उठाया और स्वयं को कुछ बनकर दिखाया जिनने विभिन्न प्रकार की बलिष्ठताओं संबंधी कीर्तिमान स्थापित किए हैं । उनमें से अधिकांश ऐसे थे जिन्हें आरंभिक दिनों में गया-गुजरा ही माना जाता था, पर अपने मनोबल का उपयोग करके आश्चर्यजनक प्रगति कर सकने में समर्थ हुए ।

हरियाणा के चंदगी राम आरंभिक दिनों में क्षय से बुरी तरह ग्रसित थे । यूरोप के सैण्डो जुकाम से बुरी तरह पीड़ित रहते थे और शरीर हड्डियों का ढाँचा मात्र था, पर जब उन्होंने अपने शरीर को सँभालने का निश्चय किया और सुधार के नियमों को दृढ़ता पूर्वक कार्यान्वित करने लगे तो संसार के माने हुए पहलवानों में उनकी गणना होने लगी और स्थिति में कायाकल्प जैसा परिवर्तन हो गया ।

कालिदास और वरदराज युवावस्था तक मूढ़मति समझे जाते थे । विश्व विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन तक की बुद्धि आरंभिक दिनों में बहुत मोटी थी, किंतु इन लोगों ने जब अपने बुद्धि पक्ष में तीक्ष्णता लाने का निश्चय किया तो उनकी विद्वता प्रथम श्रेणी के मनीषियों में गिनी जाने लगी । ओलंपिक खेलों और सरकसों में अद्‌भुत काम करने वाले, कीर्तिमान स्थापित करने वाले आरंभ से ही वैसी स्थिति में नहीं थे । उनने अपने को किसी विशेष ढाँचे में ढालने का सच्चे मन से प्रयत्न किया और उस स्थिति तक जा पहुँचे जिसे देखकर साथियों को उनकी प्रगति के पीछे कोई जादुई चमत्कार दीखने लगा ।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन दयनीय दरिद्रता वाले परिवार में उत्पन्न हुए । उपयुक्त वातावरण और साधन न होते हुए १३ बार हारे । इतने पर भी उनने अपना मन छोटा न होने दिया । मनोबल स्थिर रखा और प्रयत्नों में ढील नहीं की । अंततः अमेरिका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के अद्वितीय प्रतिभावान राष्ट्रपति बन सके । अमेरिकी पतियों में जार्ज वाशिंगटन और गिरफीटा जैसों को पैतृक सुविधा-साधन नहीं मिले वरन् अभावों और प्रतिकूलताओं से जूझते हुए अपना रास्ता आप बनाते हुए आगे बढ़ सके ।

इतिहास के पृष्ठ पलटे जाएँ तो सुविधा-साधनों के आधार पर व्यक्तित्व का विकास करने वाले लोग बहुत ही कम मिलेंगे । वे सुविधाओं की बहुलता का विलासी उपयोग करने में ही व्यक्तित्व ही दृष्टि से हेय और हीन बनते गए हैं । प्रगतिशीलों की जीवन गाथा बताती है कि मनोबल और साहस के द्वारा ही छोटी परिस्थिति वाले प्रगति के उच्च शिखर तक पहुँचने में समर्थ हुए हैं । जिन्होंने अपने ऊपर नियमित व्यवस्था, दृढ़ता और साहसिकता का अंकुश रखा उनके प्रगति पथ को कोई भी अवरुद्ध न कर सका ।

यह मनोबल किसी के द्वारा अनुदान में नहीं मिलता । अपनी व्यक्तिगत सूझ-बूझ के सहारे ही उसे बढ़ाया जाता है । मनोबल का प्रथम प्रयोग और अभ्यास अपने दुर्गुणों से जूझने और सद्गुणों को बढ़ाने के माध्यम से किया जाता है । लोग यह भूल जाते हैं कि छोटी-छोटी दुर्बलताएँ मनुष्य को उसी प्रकार छूँछ बना देती हैं जैसे कि फूटे घड़े में से बूँद-बूँद पानी रिसते रहने पर उसे खाली कर देता है और इसके विपरीत एक-एक कण जमा करने से मनभर का बड़ा पात्र भर जाता है ।

दुर्गुण में चोरी-बेईमानी जैसे दोषों की प्रमुखतया निंदा की जाती है किंतु सच पूछा जाए तो आलस्य और प्रमाद सबसे बड़े दुर्गुण हैं । अस्त-व्यस्तता और अव्यवस्था के रहते कोई व्यक्ति न तो दुर्गुण रहित बन सकता है और न अन्यान्यों पर अपनी छाप छोड़ सकता है, भले ही वह कितना ही योग्य क्यों न हो । वह जिस काम में भी हाथ डालेगा उसमें खामियाँ ही खामियाँ भरी दृष्टिगोचर होंगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसे लोगों को कोई दायित्वपूर्ण काम सौंपने में भी लोग कतराते हैं और बेईमान न होने पर भी अव्यवस्था के कारण उसे गया गुजरा मानते हैं । ऐसे लोग एक प्रकार से अपनी प्रतिष्ठा ही गवाँ बैठते हैं, उन्नति के अवसर प्राप्त करना तो दूर की बात रही । जो अपनी खामियों पर तीखी दृष्टि नहीं रखता और उन्हें सुधारने का प्रयास नहीं करता, समझना चाहिए कि उसका विधाता सदा बाँया अर्थात् प्रतिकूल ही रहेगा ।

संकल्पबल, साहस और मनोबल की अभिवृद्धि का यदि महत्व समझ लिया गया तो यह समझना चाहिए कि आत्म संतोष और लोक सम्मान का सुनिश्चित मार्ग मिल गया-निजी व्यक्तित्व को निखारने एवं प्रतिभावान् बनने का राजमार्ग यही है ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्वल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्वल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org